

Dr. Sarita Devi
Assistant Professor
Department of Psychology
Maharaja college, Ara

दैनिक जीवन की मनोविकृतियाँ (Psychopathology of everyday life)

सभी व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में कुछ ना कुछ भूलें करता है। साधारणतः इन सभी तरह के भूलों का कोई स्पष्ट कारण हमें पता नहीं चलता है और हम इसे एक संयोगवश या निरर्थक होने वाली घटना समझकर उस पर ध्यान नहीं देते हैं। परंतु फ्रायड के अनुसार, इस तरह का भूलें निरर्थक एवं संयोगवश नहीं होते बल्कि वे सार्थक होते हैं और उनका कारण अचेतन या अर्द्धचेतन में होता है। फ्रायड ने कई उदाहरण देकर स्पष्ट किया है कि इन सभी तरह की भूलने के पीछे कोई न कोई कारण जरूर होता है। इन भूलों से संबंधित अचेतन में दमित कुछ दुखद या अतृप्त अनुभूतियाँ होती हैं जिनके मानसिक संघर्ष से मुक्ति पाने के लिए हम अचेतन रूप से उन भूलों को कर बैठते हैं।

फ्रायड के अनुसार, ऐसी भूलें एकाएक एवं अज्ञानतावश नहीं होती है बल्कि उनका कारण होता है। और वह कारण व्यक्ति के अचेतन में दमित होता है। अचेतन में दमित ऐसी प्रवृत्तियाँ इन गलतियों या भूलों द्वारा चेतन में अभिव्यक्त होती हैं।

दैनिक जीवन की मनोविकृतियों के प्रमुख प्रकार (Some important types of psychopathologies of everyday life) - फ्रायड ने अनेकों तरह की मनोविकृतियों (Psychopathologies) का वर्णन किया है जिनमें निम्नांकित प्रमुख है-

1. बोलने की भूले (Slip of tongue) - प्रायः यह देखा गया है कि दैनिक जीवन में व्यक्ति से बोलने की भूलें हो जाया करती हैं। वह बोलना कुछ चाहता है और बोल कुछ और ही देता है। ऐसी गलतियों पर स्वयं व्यक्ति को भी आश्चर्य होता है।

उदाहरणस्वरूप- एक बार एक सभा में किसी व्यक्ति को अपने मित्र के लेख पर बधाई देनी थी और उसे कहना था " क्या मैं इस महान लेख पर अपना साधारण विचार प्रकट कर सकता हूँ?" परंतु उसने कहा " क्या मैं इस साधारण लेख पर अपना महान विचार प्रकट कर सकता हूँ?" इस उदाहरण से स्पष्ट है कि उस व्यक्ति के अचेतन मन में इस लेख के प्रति महानता का नहीं बल्कि निम्नता का विचार था। इसी तरह के अनेक उदाहरण हम अपने दैनिक जीवन से भी दे सकते हैं जिसमें इस तरह की बोलने की भूलें हुआ करती हैं। फ्रायड के अनुसार, इसका कारण अचेतन में दमित इच्छाएं होती है जो इस तरह की भूल के रूप में चेतन में व्यक्त होकर अपना आंशिक संतुष्टि कर लेता है।

2. नामों को भूलना (Forgetting of names) - प्रायः ऐसा होता है कि हम अपने दैनिक जीवन में परिचित व्यक्तियों, वस्तुओं तथा स्थानों के नाम को स्थायी या अस्थायी तौर पर भूल जाते हैं। कई बार तो बहुत कोशिश करने के बाद भी उनके नाम याद नहीं आते हैं परंतु अपने आप फिर बाद में याद आ जाते हैं। फ्रायड के अनुसार, इस तरह के अस्थायी भूलने का कारण अर्द्धचेतन (Unconscious) होता है। परंतु स्थायी रूप से भूलना या लंबे समय तक याद नहीं आने का कारण अचेतन (Unconscious) ही होता है।



उदाहरणस्वरूप- एक महिला अपनी बेटी की कुछ मानसिक समस्याओं का इलाज कराने के लिए मनोचिकित्सक के पास गयी। मनोचिकित्सक द्वारा बेटी का नाम पूछे जाने पर महिला उसके नाम को बतलाने में असमर्थ रही क्योंकि वह भूल गई थी। बाद में बातचीत से पता चला कि महिला को इस बेटी को जन्म देने में भयानक तकलीफें उठानी पड़ी थी। स्पष्ट है कि अचेतन में दमित अप्रिय एवं दुखद अनुभवों द्वारा उत्पन्न मानसिक संघर्षों से मुक्ति पाने हेतु अचेतन रूप से महिला अपनी बेटी का नाम भूल गई थी।

3. लिखने की भूलें (Slip of pen) - लिखने की भूलें भी हमारे दैनिक जीवन की सामान्य भूलों में से एक है। इस तरह की भूल में व्यक्ति लिखना कुछ चाहता है और लिख कुछ देता है। लिखने की भूलों में इसके अलावा अन्य भूलें जैसे अधिक शब्द लिख देना, सही शब्द के बदले विपरीत शब्द लिख देना, किसी महत्वपूर्ण शब्द का छूट जाना, बाद के शब्दों को पहले लिखना आदि सम्मिलित होती है। सामान्यतः ऐसी गलतियों का कारण लिखते समय ध्यान ना देना, या ध्यान बँट जाना या भाषा ज्ञान का अभाव माना गया है। परंतु, फ्रायड के अनुसार, लिखने की भूले भी अचेतन की दमित इच्छाओं के कारण ही होता है।

उदाहरणस्वरूप- एक बार किसी व्यक्ति ने छुट्टी हेतु अपने बॉस को पत्र लिखा। जिसमें वह लिखना चाहता था " चूँकि मेरे ससुर की मृत्यु हो गई है इसलिए मुझे आकस्मिक छुट्टी पर जाने की इजाजत दी जाए।" परंतु उसने लिखा " चूँकि आपके ससुर की मृत्यु हो गई है इसीलिए मुझे आकस्मिक छुट्टी पर जाने की इजाजत दी जाए।" स्पष्टतः उस व्यक्ति को अपने ससुर से अधिक लगाव एवं प्रेम था जिसकी मृत्यु एक दुखद समाचार थी जो अचेतन में दमित हो गयी थी। और अचेतन की वह इच्छा लिखने की भूल के रूप में प्रकट हुई।

4. छपाई की भूलें (Misprints) - छपाई की भूलें भी हमारे जीवन में अक्सर देखने को मिलती है। अक्सर समाचार पत्रों, पुस्तकों एवं विज्ञापनों में इस तरह की भूलें देखने को मिलती है तथा अनेक बार इन गलतियों का सुधार भी देखने को मिलता है। फ्रायड के अनुसार, इन गलतियों से भी हमें अचेतन में दमित इच्छाओं एवं विचारों के संकेत मिलते हैं। जिसकी अभिव्यक्ति छपाई की इन भूलों के माध्यम से प्रकट होती है।

उदाहरणस्वरूप- एक बार लंदन के एक समाचार पत्र में छपा कि सभा में "His Highness clown Prince" भी उपस्थित थे। 'clown' का अर्थ अंग्रेजी में 'जोकर' होता है। सचमुच में 'clown' की जगह 'crown' छपना था। अगले दिन समाचार पत्र में क्षमा याचना के साथ गलती का सुधार किया गया और छपा "the crow Prince" भी उपस्थित थे। यहाँ पुनः एक गलती हो गयी - 'crown Prince' की जगह 'Crow Prince' (कौवा राजकुमार) छप गया। इस बुराई गई गलती से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रेस के प्रायः सभी कर्मचारी में ' crown Prince' के प्रति घृणा की भावना थी।

5. पहचानने की भूलें (Mistakes in recognition) - हमारे दैनिक जीवन में पहचानने की भूलें भी एक महत्वपूर्ण भूल है। ऐसी भूलें किसी वस्तु, स्थान तथा व्यक्ति को पहचानने से संबंधित होती है।

उदाहरणस्वरूप - अक्सर देखा गया है कि हम किसी अपरिचित व्यक्ति को परिचित व्यक्ति या मित्र समझ बैठते हैं तथा किसी परिचित व्यक्ति या वस्तु के उपस्थित रहने पर भी हम उसे देख नहीं पाते हैं। फ्रायड के अनुसार, जब किसी व्यक्ति को अपने मित्र को देखने की अधिक चाहत होती है तो वह अपरिचित व्यक्ति को ही अपना मित्र समझ बैठता है। इस प्रकार की भूल द्वारा व्यक्ति अपने मित्र से मिलने की अचेतन इच्छा की संतुष्टि कर लेता है। इस तरह से कभी कभी ऐसा होता है कि व्यक्ति या वस्तु के उपस्थित होने पर भी हम उसे देख नहीं पाते हैं। फ्रायड के अनुसार, ऐसा इसलिए होता है क्योंकि अचेतन में उस व्यक्ति या वस्तु के प्रति घृणा होती है। पहचानने की इन दोनों तरह की भूलें अधिक सामान्य है और इनके द्वारा व्यक्ति के अचेतन मन में दमित इच्छाओं के बारे में हमें संकेत मिलते हैं।



6. वस्तुओं को गलत स्थान पर रखना (Mislaying of objects) - अक्सर ऐसा देखा गया है कि हम वस्तुओं जैसे चाबी, महत्वपूर्ण कागज, रुमाल, कलम, डायरी आदि को इधर उधर रख देते हैं, और समय पर जब उन्हें ढूँढते हैं तो वह वस्तु नहीं मिलती है। फ्रायड के अनुसार, दैनिक जीवन की इन भूलों के पीछे भी अचेतन की दमित इच्छाएं सक्रिय होती हैं। उनका मानना है कि इस तरह की भूलों से यह संकेत मिलता है कि व्यक्ति में उस वस्तु को अपने सामने से हटा देने की प्रवृत्ति अधिक होती है क्योंकि ऐसा कर देने से उसकी उस वस्तु से संबंधित कोई समस्या या उलझन का समाधान हो जाता है।

7. अनजाने में की गई क्रियाएं (Erroneously carried out action) - अक्सर ऐसा होता है कि हम चेतन रूप से जो करना चाहते हैं उसके बदले में हम कोई दूसरी क्रिया कर बैठते हैं और जब इन गलतियों का हमें ज्ञान होता है तो उसका हमें कोई अर्थ ही समझ में नहीं आ पाता है।

उदाहरणस्वरूप - एक बार किसी औरत ने अपने पति से कोई चीज मँगायी परंतु पति दूसरा सामान तो लाए पर पत्नी द्वारा मँगाई चीज को लाना भूल गए। इस बारे में फ्रायड का कहना है कि पति के अचेतन में पत्नी द्वारा मँगाई गई वस्तु के प्रति तुच्छ या घृणा की भावना थी। फ्रायड के अनुसार, इस तरह की सभी गलतियाँ जो अनजाने में होते दिख पड़ती हैं, के पीछे अचेतन की दमित इच्छाएं प्रबल होती हैं।

8. सांकेतिक क्रियाएं (Symptomatic acts) - व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में कुछ ऐसी सांकेतिक क्रियाएं, जैसे- बैठे-बैठे पैर हिलाना, कलम या पेंसिल के ऊपरी भाग को दांत से दबाना, चाबी के गुच्छे को नचाना, भाषण देते समय किसी खास शब्द को बार-बार दोहराना, आदि करता है। इन सांकेतिक क्रियाओं का अर्थ तो व्यक्ति खुद भी नहीं समझ पाता है, परंतु फ्रायड के अनुसार, निश्चित रूप से इन हरकतों द्वारा अचेतन की दमित इच्छाओं का संकेत मिलता है।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि हमारे सामान्य जीवन की गलतियाँ या भूलें जो स्पष्टतः संयोगवश एवं निरर्थक प्रतीत होती हैं, सचमुच में संयोगवश एवं निरर्थक नहीं होती हैं। इन भूलों एवं गलतियों द्वारा अचेतन मन की अतृप्त इच्छाएं एवं विचारों की अभिव्यक्ति होती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से दैनिक जीवन की ऐसी भूलें महत्वपूर्ण एवं सार्थक होती हैं।

